WWJMRD 2018; 4(1): 400-402
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

अक्षय कुमार यादव
(सहायक आचार्य)
राजस्थान कॉलेज, पावटा, जयपुर, भारत

भारत–चीन के मध्य विवादास्पद क्षेत्र : बदलता रणनीतिक परिदृश्य एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अक्षय कुमार यादव

सार संक्षेप–
कनफ्यूसियस का 2000 साल पुराना बोर्ड पर खेला जाने वाला एक खेल है, जिसका नाम वेई–की या वेई–ची है। अनेक लड़ाईयों और सामरिक घेराबन्दी में इस खेल का उच्चारण वे–ची के रूप में किया जाता है, जिसका अर्थ है–''घेराबन्दी का खेल।'' पश्चिम में दक्षिण के नाम से मशहूर वे–चीन में एक निर्णायक मुठभेड़ की बजाय लड़ाई का विस्तृत दायरा होता है, जिसमें अनेक मोर्चे होते है। यह त्वरित रणनीतिक फायदे की बजाय दूरगामी योजना पर जोर देता है। यह एक उलझाऊ खेल है, जोकई घंटे तक चल सकता है। यह खेल चीनी रणनीतिक संबंधों का प्रमुख आधार है।
चीन 13 देशों से घिरा है और इतने ही विवाद उसे विरासत में मिले है इसके लंबे उथल–पुथल ने देशवासियों को यह सलाह दी, ''सारी समस्याएँ सुलझाई नहीं जा सकती है।'' उसके अनेक शत्रु थे, खतरा का आशका भी अधिक था। इस कारण चीनिया की सोच है कि परिस्थितियों पर पूर्ण नियंत्रण की उम्मीद करना अव्यावहारिक है। इस कारण उन्हें पूर्ण लाभ की अपेक्षा लम्बे संघर्ष की आदत पड़ गई है। किसिंगर लिखते है, ''चीनी परंम्परा में जहां निर्णायक युद्ध और बहादूरी के कारनामों पर जो दिया जाता है, वहीं चीन विचारधारा कुटिल, अप्रत्यक्ष और धैर्य से प्राप्त लाभ पर जोर देती है।'' भारत में पश्चिम की तरह ही युद्ध का लोकप्रिय खेल है, शतरंज। इसकी जड़े भारत में है। शतरंज के खेल का एकमात्र ध्येय शत्रु पर विजय प्राप्त करना होता है। इस खेल में प्रत्येक खिलाड़ी दूसरे की सेना का सफाया कर तथा राजा को शह देकर स्पष्ट देकर स्पष्ट जीत हासिल करना चाहता है। शतरंज के खेल में पूर्ण विजय या ड्रॉ होता है, जहां दोनों पक्ष जीत की आस छोड़कर पीछे हट जाते है। यह खेल भारतीय रणनीतिक संबंधों का प्रमुख आधार स्तम्भ है।

संकेताक्षर :– निर्णायक, कुटिल, चीनी, विचारधारा, वेई–ची।

प्रस्तावनाऐं :–
भारत–चीन संबंधों पर यदि इस तुलनात्मक विश्लेषण को लागू किया जाए तो यह दोनों देशों के बीच दाँव पर लगे सारे मुद्दों की व्याख्या कर सकता है। चीन की धूर्तता, खाली क्षेत्रों को भरना, सामरिक घेराबन्दी, शत्रु के सामरिक सामर्थ्य को विफल करना जैसे शब्दों से परिचित है। चीन जिस चालाकी से भारत की सीमाओं पर चोट करता है, जिस प्रकार यह उन क्षेत्रों पर घुसपैठ करता है, जिन्हें भारतीय नेता खाली या अचिह्नित बताते है, और जिस प्रकार चीन भारत को रणनीतिक विकल्पों को छोड़ने पर मजबूर कर देता है, उससे साफ हो जाता है कि भारत की घेराबन्दी के लिए चीन किस प्रकार वेई–ची के सिद्धान्तों का पालन करना रहा है।
दूसरी तरफ, यह भी चीनी वेई–ची का ही तरीका है कि चीन अनेक मोर्चे खोलता है, साथ ही यह भी ध्यान रखता है कि कोई पूरी लड़ाई का रूप न ले पाए।
मानचित्र का अध्ययन करने पर देखते है कि मुख्य विवादित क्षेत्र निम्न है–

(1) पश्चिमी क्षेत्र में भारत–चीन के मध्य निम्न क्षेत्र विवादित है–
(A) अक्साई चिन– अक्साई चिन पर क्षेत्रीय विवाद की जड़े ब्रिटिश साम्राज्य अपने भारतीय उपनिवेश और चीन के बीच कानूनी सीमा की स्पष्ट व्याख्या न करने की विफलता में निहित है।
➢ ब्रिटिश राज के दौरान भारत और चीन के बीच दो सीमाएं प्रस्तावित की गई थी–

Correspondence:
अक्षय कुमार यादव
(सहायक आचार्य)
राजस्थान कॉलेज, पावटा, जयपुर, भारत

- जॉनसन लाइन ;श्रवीदेवदश्े स्पदमद्ध और मैकडॉनाल्ड लाइन ;डंक्वदंसक स्पदमद्ध।
- जॉनसन लाइन, अक्साई चीन की भारतीय नियंत्रण में प्रदर्शित करती है जबकि मैकडॉनाल्ड लाइन इसे चीन के नियंत्रण में प्रदर्शित करती है।
- भारत–चीन के सार्थ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में जॉनसन को सही मानता है जबकि दूसरी ओर, चीन मैकडॉनल्ड लाइन को भारत–चीन के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा मानता है।
- भारतीय प्रशासित क्षेत्रों को अक्साई चिन से अलग करने वाली रेखा को वास्तविक नियंत्रण रेखा (लाईन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल) के रूप में जाना जाता है और यह रेखा चीन द्वारा दावा की जाने वाली अक्साई चिन सिमा रेखा के साथ समवर्ती है।
- भारत और चीन के बीच 1962 में विवादित अक्साई चिन क्षेत्र को लेकर युद्ध हुआ था। भारत का दावा है कि यह कश्मीर का हिस्सा है, जबकि चीन ने दावा किया कि यह झिंजियांग का हिस्सा है।
- इसके अलावा पाकिस्तान का 1963 में चीन–पाक समझौते के तहत अपने कब्जे वाले कश्मीर का लगभग 5180 वर्ग किमी क्षेत्र चीन को दे दिया।

(B) पूर्वी लद्दाख – पूर्वी लद्दाख का मुद्दा भारत की आजादी के समय से विवादित है। 1962 की लड़ाई भी यहां लड़ी गयी। हिमालयन क्षेत्र में बहुत सी जगह सीमा विवादित है। महाराजा हरि सिंह जब तक जम्मू–कश्मीर राज्य पर शासन कर रहे थे, तब तक लद्दाख में राजा का एक प्रतिनिधि तैनात था। हालांकि सन् 1948 में भारतीय संघ में परिग्रहण और विलय के बाद हालात बदल गए। वहां राजा का कोई प्रतिनिधि नहीं रह गया। यह भारत का एक हिस्सा बन गया था और अनेक स्थानों के समान ही यहांह भी छोटे–छोटे पुलिसकर्मियों पर प्रदेश की सुरक्षा की जिम्मेदारी थी। सन् 1949 में चीन द्वारा जिनजियांग के कब्जे और उसके बाद तिब्बत में उसके दाखिल होने की खबर ने लद्दाख के लोगों को दहशत में डाल दिया। लद्दाख के मुख्य लामा, कुशम बकुला जो श्रीनगर में रहते थे और संविधान सभा के सदस्य भी थे, उन्होंने खुलकर कहा ''लद्दाख के लोग अपनी मातृभूमि और संस्कृति तथा धर्म की सुरक्षा को लेकर चिंतित होते जा रहै है।'' साथ ही उन्होंने यह भी कहां, ''यह बाहरी आक्रमण न केवल लद्दाख के लिए, बल्कि परे जम्मू–कश्मीर राज्य के लिए खतरा है।''

(2) मध्य क्षेत्र में भारत–चीन के बीच निम्न क्षेत्र विवादित है–

(A) बाराहोटी– यह विवादित क्षेत्र भी आजादी के समय से विवादित रहा है। पहली बार सीमा में घुसपैठ को लेकर दोनों देशों के सैनिकों के बीच टकराव शुरू हो गए। पहली घटना बारहोटी में शुरू हुई, जो उस समय उत्तर प्रदेश में था और अब उत्तराखण्ड का हिस्सा है। जुलाई 1954 में चीनियों ने एक नक्शा जारी कर दावा किया कि बाराहोटी उनके हिस्से में पड़ता है। चीनियों ने इसे वूजे नाम दिया। यह स्थान कभी तिब्बत में नहीं था और हमेशा से ही तथा पारम्परिक रूप से भारत हिस्सा रहा, फिर भी चीनियों ने भारत के किसी भी दावें को मानने से इनकार कर दिया बारहोटी की घटना के बाद चीनियों द्वारा मैकमोहन रेखा का उललंघन किया जाना और भारतीय क्षेत्रों पर दावे करना एक हमेशा होने वाली घटना बन गयी।

(3) पूर्वी क्षेत्र – भारत–चीन के मध्य निम्न क्षेत्र विवादित है–

(A) मैकमोहन रेखा– मैकमोहन रेखा वह सीमा रेखा है जो भारत के अरूणाचल प्रदेश को चीन के तिब्बत स्वायतशाी प्रान्त से अलग करती है। मैकमोहन रेखा सन् 1914 में ब्रिटिश भारत की सरकार और तिब्बत सरकार के बीच हुआ यह समझौता दोनों देशों के बीच सीमा को तय करने के लिए किया गया। इस बैठक में ब्रिटिशों ने चीन को आमंत्रित किया था। चीनी प्रतिनिधि चेन ली फान अक्टूबर 1913 से लेकर जुलाई 1914 के बीच सीमा के मुद्दे पर चली बातचीत के दौरान मौजूद रहे और उन्होंने मसौदे पर दस्तखत भी किए थे। अन्तर्राष्ट्रीय संधियों पर हस्ताक्षर करने पर अर्थ होता है, बातचीत पर मुहर लगाना किंतु समझौता तब तक लागू नहीं हो सकता है, जब तक कि सभी पक्ष उस पर पूरी तरह दस्तखत न कर दे। अंतिम समझौते पर ब्रिटिशों की ओर से हेनरी मैकमोहन ने हस्ताक्षर किए, जबकि तिब्बती पक्ष की ओर से तिब्बत के प्रधानमंत्री लोनचेन शत्रा ने दस्तखत किये। यह वहीं समझौता था, जिसने तिब्बत और भारत के बीच मैकमोहन रेखा को सीमा के रूप में माने जाने का अधिकारिक ऐलान किया। चीन ने मैकमोहन रेखा प्रस्तावकों उस समय अस्वीकार कर दिया था और आज तक वह उसे मानने को तैयार नहीं है। चीन ने इसे साम्राज्यवादी रेखा कहकर खारिज कर दी है।

(B) अरूणाचल प्रदेश (तवांग)– अरूणाचल प्रदेश भारत के पूर्वोत्तर में स्थित राज्य है। चीन अरूणाचल प्रदेश के 90,000 वर्ग किमी. क्षेत्र पर अपना दावा करता है तथा मैकमोहन रेखा को भारत–चीन सीमा रेखा मानने से इंकार करता है। विशेषकर वह अरूणाचल प्रदेश स्थित तंवाग पर अपना दावा करता है। तंवाग अपने बौद्ध मठों, पहाड़ों और झरनों के लिए जाना जाता है। चीन का तर्क है कि छठे दलाई लामा का जन्म तवांग में हुआ था और तवांग ब्बियन बौद्ध परम्परा का हिस्सा है। उसका मानना है कि ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा चीन के अंतिम हिन राजवंश की कमजोरियो का फायदा उठाकर एक असमान संधि पर हस्ताक्षर करवा लिये थे। इसलिए वह मैकमोहन रेखा को मानने के लिए तैयार नहीं। दूसरी तरफ चीन अरूणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा साबित करने के लिए इसे स्वायत्त तिब्बत प्रदेश का अंग बताता है। चूंकि तिब्बत को चीन अभिन्न अंग मानता है, इसलिए अरूणाचल प्रदेश भी इसका हिस्सा है।

संदर्भ सूची–

1. जॉनसन, कीथ, ''व्हाट काइंट ऑफ गेम इज चाइना प्लेइंग'', डब्ल्यू.एस.जी. 11 जून 2011
2. माधव, राम, ''असहज पड़ोसी'', प्रभात पेपर वैक्स, नई दिल्ली 2015, पृ. 173
3. चाइना बिल्डस स्ट्रैटेनिक सी लाइंस वाशिंगटन टाइम्स, 17 जनवरी, 2005
4. बी.आर. पीपक, ''इण्डिया एण्ड चाइना, 1909–2004'' मानक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2005 पृ. 188–194

5. खन्ना, वी.एन. एवं अरोड़ा लिपाक्षी, ''भारत उसके पड़ोसी तथा यू.एस.ए.'' सिविल सर्विसेज टाईम्स, नई दिल्ली, सितम्बर 2009, पृ. 33
6. पंत. पुष्पेश, जैन, श्रीपाल, ''अन्तर्राष्ट्रीय संबंध'', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2003, पृ. 517
7. राजस्थान पत्रिका टौण्टे जैकेट
8. दैनिक भास्कर, संवादकीय पृष्ट